HISTORY

भवन निर्माण कला (Architecture)

◆ गृह निर्माण कला (Domestic Architecture)

खुदाई एवं मिलने वाले भवनों के खंडहरों एवं मिलने वाले देखने से यह पता चलता है कि नगर के सारे मकान निश्चित योजनाओं के अनुसार बनाये जाते थे। डॉ० पुसलकर ने इन भवनों को निम्न तीन भागों में बाँटा है:

(क) निवास स्थान (ख) मोहनजोदड़ो का बड़ा स्नानागार तथा (ग) सभा भवन।

(क) निवास स्थान (Dwelling Place) मोहनजोदड़ो के मकान भिन्न-भिन्न आकार और कई प्रकार के मिले हैं। छोटे ~~मकानों~~ मकानों में तो केवल दो ही कमरे हैं परंतु बड़े भवन 220 फुट चौड़े हैं। प्रत्येक घर के जल के निकास का बहुत सुंदर प्रबंध था। सभी मकान अच्छे प्रकार की पक्की ईंटों के बने हुए थे। घरों के फर्श कच्चा मिट्टी के बने हुए थे। मकानों के छतें लकड़ी या घास की चटाइयों से बनी हुई या चपटी थीं। दरवाजे तीन से लेकर 4 फुट चौड़े थे।

मुख्य द्वार से घर का आंतरिक भाग अर्थात् आंगन को सिधा नहि देखा जा सकता था। हम यह नहि पता लगा सकते थे की दरवाजे और खिड़कियाँ किस प्रकार की थी क्योंकी अब लकड़ी की कोई भी वस्तु पाँच हजार वर्ष तक सुरक्षित नहि रह सकती। बहुत से मकान दो या इससे अधिक सीढ़ियाँ थी। अलमारियों के स्थान पर मिट्टी के कलश प्रयोग किये जाते थे। घर के एक कोने में रसोई बनी होती थी परंतु साधारणतया खाना आंगन में ही बनाया जाता था। कई घर में कुएँ थे जो अधिकांशत: इस तरह बने हुये थे जिससे राहगीर उसका उपयोग कर सके। विद्वानों का अनुमान है की साहनजादड़ो में कुल 700 कुएँ थे।